Vol.12 August'18 No.1
Annual Subscription : Rs 100
Rs. 10/- per copy

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

वेदोऽखिलो
धर्ममूलम्

A Monthly publication of
Brahmasha India Vedic
Research Foundation

Brahmasha India Vedic Research Foundation
ब्रह्माशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन
C2A/58 Janakpuri, New Delhi - 110058

देवता बन गया

–महात्मा चैतन्य मुनि

वक्त कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करता
वक्त तो नाम ही गति का है।
हाँ यदि हम चाहें तो–
वक्त की बहती नदी से
अनगिनत न्यामतें समेट सकते हैं।

वक्त को यूँ ही गुजरने दें
तो कुछ भी हाथ नहीं आएगा
वक्त की रफ्तार का कोई अन्त नहीं,
कोई सीमा नहीं।

आदमी चाहे तो–
वह भी वक्त के पंख बन सकता है
छू सकता है आकाश की ऊँचाइयाँ
नाप सकता है सागर की गहराइयाँ।

वक्त सबसे बड़ी पूँजी है
यह सूत्र जिस किसी के हाथ लग गया
उसका नाम–
इतिहास के नक्षत्रों से जुड़ गया।

वक्त का अपव्यय
अपना ही अपव्यय है
वक्त के घोड़े के पाँव की ठोकर ही
पतन है।
पीठ पर चढ़ अभियान करना ही
उत्थान है।

वक्त की लगाम पकड़कर
जिसने भी इसे अनुकूल बना लिया
वही देवता बन गया।

(महर्षि दयानन्दधाम) महादेव
सुन्दर नगर (मण्डी) (हि.प्र.)

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION ACKNOWLEDGES WITH THANKS RECEIPT OF THE FOLLOWING DONATIONS:-

1. Shri Ramesh Muni, Propkarini Sabha, Pushkar Rd, Ajmer, Rajasthan Rs. 1000/-
2. Smt. Shukla Kohli, C3A/65A, Janakpuri, N. Delhi-58 Rs. 500/-
3. Shri V.P. Varshnaya, C4B/148, Janakpuri, N. Dehi-58 Rs. 500/-
4. Smt. Rattan Wadhwa, C3A/76B, Janakpuri, N. Delhi-58 Rs. 500/-

Donations to the Foundation are eligible for Tax Exemption under Section 80G of the Income Tax Act 1960 Vide No.DIT(E)1/3313/DELBE 21670-2503210 dated 25.03.2010

स्वतन्त्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION

C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058
Tel :- 25525128, 9313749812
email:deeukhal@yahoo.co.uk
brahmasha@gmail.com
Website : www.thearyasamaj.org
of Delhi Arya Pratinidhi Sabha

Sh. B.D. Ukhul
Secretary
Dr. B.B. Vidyalankar 0124-4948597
President
Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)
V.President
Dr. Mahendra Gupta *V.President*
Ms. Deepti Malhotra
Treasurer

Editorial Board

Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar,
Editor
Dr. Harish Chandra
Dr. Mahendra Gupta
Shri Shiv Kumar Madan

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

Printed & Published by
B.D. Ukhul for Brahmasha India Vedic Research Foundation
Under D.C.P.
License No. F2 (B-39) Press/ 2007
R.N.I. Reg. No. DELBIL/ 2007/22062
Price : Rs. 10.00 per copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

Brahmarpan August' 18 Vol. 12 No.1
श्रावण-भाद्रपद 2075 वि.संवत्

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

A bilingual Publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

CONTENTS

1. देवता बन गया 2
-महात्मा चैतन्य मुनि
2. संपादकीय 4
3. सांख्य दर्शन 7
-डॉ. भारत भूषण
4. वीर सावरकर एवं वीर सुभाष 9
-डॉ. रामकृष्णन शास्त्री
5. अपराजेय योद्धा - महाराणा प्रताप
-डॉ. सीमा श्रीमाली 13
6 महाराणा प्रताप के शौर्य से प्रभावित वियतनाम के राष्ट्राध्यक्ष 17
7. दुष्कर्म की बढ़ती घटनाएँ व उनसे निपटने के अचूक उपाय 19
-सत्यवान आर्य
8. अम्बेडकर ने एक सपना देखा था
-चन्द्रभान प्रसाद 23
9. आसन-प्राणायाम भर नहीं है योग
-सुरक्षित गोस्वामी 26
10. जब भगवान बुद्ध हताश हुए 29
(बुद्ध जयन्ती के अवसर पर)
-सत्यानन्द आर्य
11. सेवा की आड़ में ईसाई मिशनरियों द्वारा धर्मान्तरण के विरुद्ध ज्ञापन
-श्याम नारायण अग्रवाल 31
11. The Theory of Causation & Dharma Chakra 34
-Ashok Vohra

संपादकीय

रंगभेद की विश्वव्यापी समस्या

–डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

हम अनुभव करते हैं कि भारत में पश्चिमी देशों के गोरे विदेशियों का तो खुले दिल से स्वागत होता है परन्तु अफ्रीकी देशों के काले विदेशियों के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता। विश्व में जहाँ जर्मनी के लोग अपनी कार्यकुशलता के लिए और अंग्रेज लोग हाज़िर जवाबी के लिए जाने जाते हैं वहीं भारतीय लोगों के आतिथ्य की प्रशंसा की जाती है। गोरे विदेशी पर्यटक जब भारत से भ्रमण कर लौटते हैं तो वे अपने मेजबानों के आतिथ्य और स्नेहपूर्ण व्यवहार की खूब तारीफ करते हैं वे कहते हैं कि भारतीय मेजबान इतने अच्छे हैं कि उन्हें इस बात की जरा-सी भी चिन्ता नहीं होती कि उनके अतिथि यहाँ की भाषा नहीं जानते। इतना ही नहीं वे खाने में इस बात का भी पूरा ध्यान रखते हैं कि उनके खाने में मिर्च-मसाला अधिक न हो। उनके व्यवहार से पश्चिमी देशों के लोगों को सीखना चाहिए कि मेहमानों का स्वागत कैसे करना चाहिए। कैसे वे आपकी सुविधा के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। कैसे परिवार के लोग उनकी आवभगत करते हैं और आते-जाते समय स्नेहपूर्वक नमस्ते से अभिवादन करते हैं। भ्रमण के दौरान यदि वे चंद मिनटों के लिए इंडिया गेट पर खड़े हों तो कुछ अजनबी जरूर उनके साथ सेल्फी लेना चाहेंगे। यह तो हुई गोरे विदेशियों के साथ आतिथ्य की बात।

अफ्रीकी देशों के नागरिकों के साथ रंगभेद के कारण अनुचित व्यवहार

इसके विपरीत अब हम उन काले अफ्रीका आदि देशों के विदेशियों के साथ जन सामान्य के व्यवहार का अनुभव बताते हैं जो कुछ समय भारत की राजधानी में बिताकर अपने देश लौटते हैं। इमरान ऊबा एक नाइजीरियाई विद्यार्थी भारत में अपनी पढ़ाई समाप्त करके स्वदेश लौटता है। उसने वहाँ अपने परिवार और मित्रों को अपना अनुभव बताया कि कैसे गुस्साई भीड़ ने यह कर उसे बुरी तरह पीटा कि इसके देश के एक नागरिक ने अपने एक साथी भारतीय को काट खाया था। एक अन्य नाइजीरिया के छात्र मैक्सवेल ओर्जी ने अपने मित्रों को बताया कि कैसे भारत के लोग मुझ पर थूकते थे और हब्शी, कालू आदि नामों से पुकारते थे। वे अजब-अजब नामों से बुलाकर छेड़ते थे। भारत में कांगों के एक नागरिक 24 वर्ष के विद्यार्थी मसोंडा किटंडा ओलिवर को रंगभेद के कारण भयंकर जातीय हिंसा का शिकार होना पड़ा। वह अपनी दुःख भरी कथा सुनाने के लिए जीवित नहीं है। घटना वसन्त कुंज, दिल्ली की है। जहाँ शराब के नशे में धुत्त तीन लोगों ने एक ऑटो को किराए पर लेने के संबंध में ओलिवर से पहले गाली-गलौच की और फिर ईंटों-पत्थरों से मारकर बुरी तरह घायल कर दिया। उसकी बाद में इलाज के दौरान मौत हो गई।

कांगो निवासी ओलिवर फ्रांसीसी भाषा का अनुवादक था, वह चार साल से दिल्ली में रह रहा था। उसके भाई माइकेल ने बताया कि ओलिवर को भारत से बहुत प्यार था। वह यहाँ और रहना चाहता था। वह उन अफ्रीकियों के लिए अनुवादक के रूप में काम करता था जो इलाज के लिए यहाँ आते थे।

गत मार्च के महीने में कुछ अफ्रीकी नागरिकों के साथ मार-पीट की घटनाएँ हुईं। जब ग्रेटर नोएडा के मॉल में

भीड़ ने दो नाइजीरियाई विद्यार्थियों की बुरी तरह पिटाई कर दी। अफ्रीकी नागरिकों के विरुद्ध रंगभेद की इन घटनाओं पर सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया। विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने अपने बयान में इन घटनाओं का कारण जातीय विद्वेष नहीं माना है। हाल ही में एक दर्जन से अधिक अफ्रीकी देशों के राजदूतों ने भारत को संयुक्त राष्ट्र की मानवाधिकार परिषद के सम्मुख ले जाने की धमकी दी। उन्होंने भारत में अफ्रीकी देशों के नागरिकों के साथ किए जाने वाले अमानवीय व्यवहार की निन्दा की। इधर पुलिस ने अफ्रीकी नागरिकों की सहायता के लिए राजधानी क्षेत्र में विशेष टेलिफोन सेवा शुरू की है।

पश्चिमी देशों में, विशेषतः अमेरिका में रंगभेद बहुत अधिक है। प्राचीन काल में विदेशी गोरे लोगों ने यहाँ के मूल निवासी रेड इंडियनों का भीषण नरसंहार करके उनके देश पर आधिपत्य स्थापित कर लिया। इधर यूरोप के इंग्लैण्ड, फ्रांस, पुर्तगाल, जर्मनी, अमेरिका आदि देशों ने एशियाई और अफ्रीकी देशों पर आधिपत्य स्थापित कर उन्हें गुलाम बना लिया और उन पर अपनी भाषा और धर्म लाद दिया। इन विदेशी शासकों ने उन्हें बन्धुआ मजदूर बनाकर उनका शोषण किया। वे गुलाम देशों के लोगों को अपने उपनिवेशों में ले जाकर बेगार कराते थे। आज विभिन्न ऐशियाई, अफ्रीकी, वेस्ट इंडीज़ आदि देशों में जो भारतीय पाए जाते हैं वे इन्हीं के वंशज हैं। अमेरिका में काले लोगों के चर्च, क्रेमेटोरियम (श्मशान स्थल) आदि भी गोरे लोगों से अलग होते हैं।

भारत में जातिभेद, भाषाभेद आदि की तरह रंगभेद का भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। मुझे दिल्ली की एक ब्यूटिशियन से एक दशक पूर्व के बातचीत के अंश का स्मरण हो आता

है जब किसी ने उससे पूछा– "आप तो दक्षिण भारतीय लगती हैं जब कि आप की बहिन इंडियन लगती हैं। (ब्यूटीशियन का रंग साँवला था और उसकी बहिन का रंग कुछ गोरा था) इसके बावजूद भारत में उत्तर और दक्षिण भारत के लोग आपस में मिलजुल कर रहते हैं। यों दक्षिण भारत में भी साँवले लोगों के बीच कुछ गोरे भी हैं। यदि हम अमरीकी लोगों की दृष्टि से देखें तो केवल अफ्रीकी लोग ही काले नहीं है अपितु एशियाई और भारत के सभी लोग काले हैं। इसका एक उदाहरण फिल्मी जगत् की अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा का है जिन्हें हॉलिवुड की एक फिल्म में इस वजह से नहीं लिया गया क्योंकि वे काली हैं। इससे पता चलता है कि वहाँ रंगभेद का प्रभाव कितना गहरा है। रंगभेद हमें स्वाधीनता पाने से पूर्व गोरे शासकों की याद कराता है। काला रंग अफ्रीकी/ऐशियाई गुलामों का था तो गोरा रंग विदेशी शासकों का था। काले रंग से हम अभावग्रस्तता, गरीबी, विपन्नता, से संबंधित गरीबों, दलितों, आदिवासियों को जोड़ते हैं तो गोरे रंग से ब्राह्मणों, उच्चवर्ग के लोगों, उत्तर भारतीयों का ग्रहण करते हैं। उत्तर भारतीय स्वयं को गोरा चिट्टा कह कर गर्व करते हैं तथा काले दक्षिण भारतीयों को नीचा दिखाते हैं। कहीं–कहीं काले रंग वाले लोग रंगभेद के कारण दुःखी होकर आत्महत्या तक कर लेते हैं, यह बड़े दुःख की बात है। हमें देश में रंगभेद की भावना को लोगों के मनों से निकाल देना चाहिए और आपस में स्नेहपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

संपादक

सांख्य दर्शन (अध्याय-1, सूत्र-127)

-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

इससे पूर्व सूत्र में आत्मा की अनेकता का प्रतिपादन करने के बाद यह बताया गया कि जैसे ब्रह्माण्ड अर्थात् प्रकृति का अधिष्ठाता परमेश्वर है वैसे ही पिण्ड (शरीर) का अधिष्ठाता जीवात्मा है और वही सब अनुभूतियों का साक्षी है। यहाँ प्रश्न होता है कि आत्मा का मुख्य स्वरूप क्या है? सूत्रकार इसका प्रतिपादन निम्नलिखित सूत्र में करते हैं, सूत्र हैः-

नित्यमुक्तत्वम्।।127।।

अर्थ-(नित्यमुक्तत्वम्) नित्य मुक्त होना (आत्मा का स्वरूप है)।

भावार्थ-हमेशा पृथक् रूप होना आत्मा का स्वरूप है। प्रकृति अचेतन (जड़) और त्रिगुणात्मक अर्थात् सत्व, रज, तम रूप है। इसलिए आत्मा का मुख्य स्वरूप-त्रिगुणातीत चेतन है। इस पद का विशेष विवरण 'सांख्य सिद्धांत' के 'पुरुष' नामक प्रकरण के 'आत्मा नित्य मुक्त है' प्रसंग में किया गया है। यद्यपि आत्मा प्रकृति के संपर्क में रहता है तब भी आत्मा प्रकृति रूप नहीं है। उससे पूर्वतया पृथक् है, यही इसका अभिप्राय है।

दी हिबिस्कस,
बिल्डिंग-5, एपार्ट नं.-9बी
सेक्टर-50, गुड़गाँव (हरियाणा) 122009
फोन-0124-4948597

रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएँ

वीर सावरकर एवं वीर सुभाष

–डॉ. रामकृपाल शास्त्री

1947 से पूर्व, अर्थात् देश में स्वाधीनता आने से पूर्व, भारत को स्वाधीन कराने के लिए दो विचारधाराएँ कार्यशील थीं। एक तो वह जो भारत के तात्कालिक शासकों के समक्ष सभी भारतीयों के साथ समान व्यवहार एवं यथोचित मर्यादित व्यवहार न किए जाने के कारण अपने सहनिवासियों, साथियों को अंग्रेजों के सामने अपना विरोध प्रदर्शन कर कुत्ते के समान पूँछ हिलाते हुए दया की भीख माँगते हुए देश की स्वाधीनता चाहती थी, ये नर्मदलीय कहलाते थे। दूसरे वे जो "स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है" की घोषणा करते यत्र-तत्र अंग्रेज अत्याचारी अधिकारियों पर प्राणघातक आक्रमण करते हुए, उनकी प्रशासन व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करने का साहस दिखाते हुए, विश्व के अन्य देशों में अंग्रेजों की लूट-मार की तथा दंमनकारी प्रवृत्ति का परिचय देते हुए स्वदेश को इनके क्रूर पंजों से मुक्त कराना चाहते थे। जो कांग्रेस पार्टी में चले गये नर्म-दलीय कहलाए और जिन्होंने कांग्रेस कीं दुम हिलाने वाली नीति को स्वीकार नहीं किया वे क्रान्तिकारी कहलाए।

श्री वीर विनायक दामोदर सावरकर ऐसे क्रान्तिकारी शिरोमणि थे। महाराष्ट्र की पावन भूमि नासिक के एक छोटे से गाँव में इनके पूर्वज निवास करते थे। चित्तपावन ब्राह्मणों के कुल के श्री विनायक दीक्षित की धर्म-पत्नी श्रीमती राधाबाई मनुष्यों में श्रेष्ठ रत्न को जन्म देकर स्वयं तो धन्य हुई ही, रत्नगर्भा भारतमाता के बन्धनों को काटने वाला नर-रत्न देकर भारतमाता को भी पुत्रवती कहलाने का श्रेय दिया। यह दिन सोमवार था और विक्रमी सम्वत् 1940 की वैशाखमास के कृष्णपक्ष की षष्ठी तिथि थी। इस पावन तिथि पर ही वीर शिरोमणि भारत के सपूत का जन्म दिन मनाना चाहिए परन्तु अंग्रेजों की मानसिक सन्तानें जिन पर अब भी अंग्रेजी का

भूत सवार है ऐसे लोग उस ईस्वी 1883 के मई मास का 28वाँ दिनांक होने के कारण गलत दिन पर सावरकर का जन्म दिन मनाते हैं।

सावरकर जी जन्म लेते ही रोने लगे। रोते ही रहे। दूध भी नहीं पीते थे। सब व्यथित थे। क्या किया जाए। कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। ताऊ श्री महादेव ने गोद में लेकर चुप कराने का प्रयास किया। पराधीन भारतमाता की व्यथा से रोने वाले बालक की व्यथा को कौन समझ सकता था। अन्त में हँसी करते हुए ताऊ ने कहा अगर तू विनायक दीक्षित के आकार (कुल) का है तो चुप कर जा, दूध पी, तेरा नाम विनायक ही रख देंगे। बात तो हँसी के स्वरूप की थी पर अर्थ गम्भीर था। रोते रहना और दूध का न पीना अपने को विनायक दीक्षित के कुल का न मानना था। 24 घण्टे भी जिनके जन्म को न हुए हों इतनी बड़ी बात समझ कर रोना बन्द कर दूध पीना प्रारम्भ कर दे। क्या यह उनकी दिव्यता का प्रमाण नहीं है।

सन् 1901 में मैट्रिक पास की। विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार कर होली जलाने वालों में अग्रगण्य रहे। उस समय दस रुपया दण्ड लगाया गया। फर्ग्युसन कालेज पूना से निकाल दिए गए। परीक्षाएँ निकट थीं। बम्बई विश्वविद्यालय की अनुमति से परीक्षा दी। आन्दोलनों में रत पढ़ाई न कर पाने पर भी परीक्षा उत्तीर्ण की। इसे कौन नहीं जानता कि आप ही ऐसे प्रथम भारतीय विद्यार्थी थे जिन्हें अधिवक्ता की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने पर भी राजनीतिक कारणों से उपाधि नहीं दी गई।

इंलैण्ड से पुलिस नियन्त्रण में स्वदेश लाए जाते समय फ्रांस के निकट जहाज से समुद्र में कूद पड़े। आप प्रथम भारतीय थे जिस पर हेग के अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में मुकदमा चला। दो-दो आजीवन कारावासों की एक साथ सजा मिली। अण्डमान जेल भेजे गए। भारी-भारी पत्थर की चक्कियों से आटा पीसा। बैल की जगह स्वयं कोल्हू में जुटकर तेल

निकाला। किसलिए? क्या वह केवल हिन्दुओं को ही आजाद कराना चाहते थे? नहीं, केवल हिन्दुओं को ही नहीं भारतमाता की गोद में पलने वाले करोड़ों मुसलमान और मुस्लिमेतर यहूदी, पारसी आदि अन्य मतावलम्बियों की भी आजादी चाहते थे।

यह सब देखते हुए भी बुद्धि के दिवालियों और अंग्रेजों के सामने दुम हिला कर स्वाधीनता की भिक्षा माँगने वालों ने उनको मुस्लिम विरोधी कहा।

हाँ, उन्होंने मुसलमानों के आगे दीनता भरी मुद्रा में नरमदल वालों की तरह दुम हिला कर प्रार्थना नहीं की। वे जानते थे कि सिंह शावक के साथ बोटी के लालच में साथ देने वाला कुत्ता बोटी मिलना सन्निकट जानकर अपने लिए बोटी के टुकड़े की माँग जरूर करेगा।

वे मुस्लिम विरोधी नहीं थे। उन्होंने सब के लिए स्वाधीनता चाही। पर उनका विचार था "यदि मुसलमान साथ में आते हैं तो उनको साथ लेकर यदि नहीं साथ आते तो उनके बिना भी, यदि विरोध करते हैं तो विरोध के बावजूद हम अपने मार्ग पर चलते रहेंगे।

पोल खुल जाने के बाद जिसको अब हरिजन नेता भी मंच पर खड़े होकर गालियाँ देते हैं उसकी उस समय तक पोल नहीं खुली थी।

ऐसे महापुरुष गाँधी ने श्री पट्टाभि सीतारमैया को अध्यक्ष पद के लिए खड़ा कर दिया और कांग्रेस ने युवा वर्ग के नेता श्री सुभाषचन्द्र बोस को खड़ा कर दिया। चुनाव में सुभाष बाबू भारी बहुमत से विजयी हुए। गाँधीजी का मत था पट्टाभि सीतारमैया की हार मेरी हार है। अन्तोगत्वा गाँधी के अनुरोध पर नेताजी ने कांग्रेस के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया। श्री सुभाष बोस ने वीर सावरकर जी से भी कांग्रेस में आने का अनुरोध किया था। सावरकर जी ने कहा था "मैं अहिंसा के सिद्धान्तों में विश्वास नहीं करता हूँ। मैं सशस्त्र

क्रान्ति के द्वारा ही स्वतन्त्रता प्राप्त करने का इच्छुक हूँ।" 26.6.1940 को सुभाषबाबू सावरकर जी के मकान पर मिलने गए। श्री सावरकर जी को श्री सुभाष बाबू अपनी योजना समझा रहे थे। दोनों आनन्दित थे ऐसा लगता था मानो शृगालों के गिरोह से निकल कर सिंह अपने अग्रज से मिलकर आनन्दित हुआ हो। श्री सावरकर जी ने सुभाष बाबू को समझाते हुए कहा कि स्वदेश में रहकर हैवलॉक की तथा उस जैसी अन्य मूर्तियों को तोड़कर अंग्रेजों की जेल में पड़े रह कर सड़ना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। सच्ची राजनीति यह है कि स्वयं बचते हुए शत्रु को दबोचे रखना। मैंने हिन्दू महासभा की ढाल के नीचे रहकर ब्रिटिश भारत की सेना में अधिक से अधिक हिन्दुओं के भरती होने का जो आन्दोलन चलाया है वह मूलतः क्रान्तिकारी आन्दोलन है। आप भी रासबिहारी बोस की तरह अंग्रेजों को चकमा देकर निकल जाओ और विदेश में पहुँच कर जर्मन, इटली आदि के उपनिवेशों में ब्रिटिश-भारतीय सैनिकों का मार्गदर्शन करो। सम्पूर्ण भारत की स्वतन्त्रता की घोषणा करते ही बंगाल की खाड़ी या ब्रह्मदेश की ओर से ब्रिटिश सत्ता पर आक्रमण किया जा सकता है। इस प्रकार के सशस्त्र प्रयास किये बिना हिन्दुस्तान को स्वतन्त्र कदापि नहीं किया जा सकता।

धन्य है वीर सावरकर, और धन्य है वीर सुभाष, जिन्होंने श्री सावरकर की विचारधारा को साकार कर अंग्रेजों का मनोबल तोड़ दिया। जिसके कारण ब्रिटिश प्रधानमन्त्री को लिखना पड़ा कि जिन भारतीय सैनिकों के बल पर हम भारत पर शासन करते हैं वे हमारे नियंत्रण में नही रहे और द्वितीय महायुद्ध के कारण हम ऐसी स्थिति में नहीं रहे कि अपनी सेनाएँ भारत में पहुँचा सकें। विजय तो दूर की बात है। ऐसे में हमें ससम्मान भारत को छोड़ देना चाहिए।

अपराजेय योद्धा : महाराणा प्रताप

–डॉ. सीमा श्रीमाली

वीर पुरुषों के गौरवपूर्ण आदर्श चरित्रों से मनुष्य जाति एवं राष्ट्रों में एक संजीवनी शक्ति का संचार होता है। इसीलिए प्रत्येक देश अपने वीर पूर्वजों के शिक्षाप्रद और उत्साहवर्धक विस्तृत चरित्र से सदैव प्रेरणा प्राप्त करता रहता है। राजस्थान में भी ऐसे अनेक अनुकरणीय, निस्वार्थी और आदर्श वीर हुए हैं जिनमें वीर शिरोमणि आर्यकुल–कमल–दिवाकर महाराणा प्रताप सब में अग्रगण्य हैं। महाराणा प्रताप का आसन वीर पुरुषों में बहुत ऊँचा है। भारत में राजस्थान के इतिहास को इतना अधिक उज्ज्वल, आदर्श तथा गौरवपूर्ण बनाने का श्रेय प्रताप को ही है। वस्तुतः वे स्वतन्त्रता के पुजारी स्व–गौरव के रक्षक एवं आत्मस्वाभिमान और वीरता के साकार अवतार थे।

जिस समय पूरा उत्तर भारत मुग़ल सम्राट् अक़बर के दरबार में नत हो चुका था, उस समय केवल एक ही राजपूत वीर मुग़ल सेनाओं के सामने अपनी छोटी–सी सेना के साथ सीना तानकर खड़ा हो गया था। महाराणा प्रताप ने अक़बर की अधीनता स्वीकारने से इन्कार कर दिया था। महाराणा प्रताप को प्राणों से भी प्यारी मातृभूमि की स्वतन्त्रता प्रिय थी। महाराणा सांगा के पौत्र और महाराणा उदयसिंह के सुपुत्र वीर शिरोमणि प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रताप का जन्म राजस्थान के पाली शहर में 9 मई, सन् 1540 को हुआ था। उनके पिता महाराणा उदयसिंह एक महान् योद्धा थे। उनकी माता का नाम जैवन्ताबाई था। राणा उदयसिंह ने अपनी रानी भटियाणी पर विशेष प्रेम होने के कारण उसके पुत्र जगमाल को प्रताप से छोटा होने पर भी युवराज बनाया था। मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़ थी। किन्तु सन् 1555 में दिल्ली के सिंहासन पर अक़बर का अभिषेक हुआ तभी से भारत की राजनीति में एक नया परिवर्तन आया। अक़बर भारत का एकछत्र सम्राट् बनना चाहता था। चित्तौड़गढ़ पर मुग़ल

सम्राट् अक़बर की निगाह जमी हुई थी। वह चित्तौड़गढ़ को फतह करने के इरादे से अपनी विशाल सेना लेकर यहाँ आया और उसे चारों ओर से घेर लिया। अक़बर ने उदयसिंह के पास प्रस्ताव भेजा– "आप मेरी अधीनता स्वीकार कर लें।" परन्तु उदयसिंह ने उसकी अधीनता स्वीकार करने से साफ इनकार कर दिया।

जगमाल को अयोग्य सिद्ध होता देख, मेवाड़ के सरदारों ने महाराणा प्रताप को राज्य के सिंहासन पर बैठा दिया। जगमाल गोगुन्दा से चलकर अक़बर के पास पहुँचा और उसे अपना सारा वृत्तान्त सुनाया। इस पर अक़बर ने सिरोही का आधा राज्य जगमाल को दे दिया। वहाँ के राजा सुरताण और जगमाल में विरोध हो गया। अक़बर की सहायता से जगमाल ने सुरताण से युद्ध किया। युद्ध में सुरताण की विजय हुई और जगमाल का अन्त हुआ।

अक़बर ने गुजरात को विजय कर लिया था। राजधानी लौटकर अक़बर ने जयपुर के कुँवर मानसिंह को बहुत–सी सेना के साथ डुँगरपुर तथा उदयपुर की तरफ यह आज्ञा देकर भेजा कि जो हमारी अधीनता स्वीकार करे, उसका सम्मान करना और जो ऐसा न करे उसे दण्ड देना। शाही फौज ने डूँगरपुर को विजयकर लिया और वहाँ का रावल आसकरण पहाड़ों में चला गया। वहाँ से मानसिंह उदयपुर आया और महाराणा को बादशाही सेवा स्वीकार करने हेतु समझाया। महाराणा ने उसका आदर कर स्नेहपूर्ण व्यवहार किया। उदयसागर की पाल पर दी गई दावत में महाराणा के सम्मिलित न होने पर मानसिंह ने अपमानित अनुभव किया। कुँवर मानसिंह ने बादशाह के पास पहुँचकर अपने अपमान का सारा हाल सुनाया। अक़बर ने मानसिंह को ही राणा से युद्ध करने के लिए भेजा। मानसिंह ने खमणोर के पास हल्दीघाटी से कुछ दूर बनास नदी के किनारे डेरा डाला। महाराणा भी गोगुंदा से अपनी सेना तैयार कर मानसिंह से तीन कोस दूरी पर ठहरे। हल्दीघाटी से कुछ ही दूर खमणोर

के निकट दोनों सेनाओं के बीच सन् 1576 की जून में भीषण युद्ध हुआ। इस लड़ाई में अक़बर का आश्रित अलबदायूनी भी उपस्थित था। उसने अपनी आँखों देखा वर्णन किया।

राणा कीका (प्रताप) ने अपनी सेना के दो भाग किए। एक भाग का सेनापति हकीम सूर अफगान था। दूसरे विभाग का सेनापति स्वयं कीका (प्रताप) था। इस युद्ध में ग्वालियर के राजा मान के पोते रामशाह ने, जो हमेशा राणा की हरावल में रहता था, अद्‌भुत वीरता दिखाई। प्रताप ने बड़ी वीरता के साथ हल्दीघाटी का युद्ध लड़ा। मुगल सेना का सेनापति मानसिंह था। प्रताप ने मानसिंह से सीधा सामना किया। किन्तु मानसिंह के हाथी की सूँड पर पैर रखते समय महाराणा के प्रिय घोड़े चेतक का पैर कट गया। प्रताप शत्रुओं से घिर गये। इस विकट स्थिति में झाला मानसिंह ने अपूर्व वीरता का प्रदर्शन कर महाराणा के प्राणों की रक्षा की। हल्दीघाटी के सम्बन्ध में दोनों पक्ष अपनी विजय बताते हैं। वस्तुतः दोनों पक्षों के इतिहास को जानने के बाद यही निष्कर्ष सामने आया कि उस समय के संसार के सबसे बड़े सम्पन्न और प्रतापी अक़बर के सामने एक छोटे से प्रदेश के राणा प्रताप ने अपनी अद्‌भुत वीरता दिखाई और मातृभूमि की रक्षा की तथा वह अविजित रहा। बादशाह ने भिन्न-भिन्न अफसरों की अध्यक्षता में महाराणा को अधीन करने या मार डालने के विचार से कई बार मेवाड़ पर सेनाएँ भेजीं और एक बार खुद ने भी चढ़ाई की परन्तु सफलता नहीं मिली।

फिर अक़बर ने महाराणा के देहावसान तक अर्थात् 11 वर्ष तक कोई चढ़ाई नहीं की, क्योंकि वह पंजाब की तरफ लड़ाइयों में लगा रहा। महाराणा प्रताप ने 1586 में चित्तौड़गढ़ और मांडलगढ़ को छोड़कर सारे मेवाड़ को पुनः अपने अधीन कर लिया। महाराणा प्रताप ने मानसिंह और जगन्नाथ कछवाहा की चढ़ाइयों का बदला लेने के लिए आमेर पर हमला किया। उसने धनाढ्य नगर मालपुरा को लूटकर

नष्ट-भ्रष्ट किया। महाराणा की शेष आयु सुख से व्यतीत हुई। महाराणा ने अपने उजड़े मुल्क को आबाद किया। अधूरे उदयपुर नगर को बसाया। अपने सरदारों को पद, प्रतिष्ठा और सम्मान दिया तथा उनको बड़ी-बड़ी जागीरें दीं। महाराणा प्रताप चावंड के महलों में रहते हुए बीमार पड़े और 19 जनवरी, सन् 1597 को उनका स्वर्गवास हो गया। जब महाराणा के स्वर्गवास का समाचार अक़बर के पास पहुँचा, तो वह स्तब्ध रह गया। उसकी दशा देखकर दरबारी लोगों को आश्चर्य हुआ कि महाराणा प्रताप की मृत्यु से बादशाह को प्रसन्न होना चाहिए था, न कि दुःखी। उस समय प्रसिद्ध डिंगल कवि दुरसा आढ़ा ने निम्नलिखित छण्पय में अपने भाव प्रकट किये-

आस लेगो अणदाग, पाघ लेगो अणनामी, गौ आडा गवडाय, जिको बहुतो धुर वामी।

नवरोजे नह गयो, न गौ असतां नवल्लीं, न गौ झरोखाँ हेठ, जेठ दुनियाण दहल्ली।

गहलोत राण जीती गयो, दसण मूंद रसणा डसी, नीसास मूक मारिया नयण, तो मृत शाह प्रतापसी।

"अर्थात् हे गहलोत राणा प्रतापसिंह तेरी मृत्यु पर शाह (बादशाह) ने दाँतों के बीच जीभ दबाई और निश्वास के साथ आँसू टपकाये, क्योंकि तूने अपने घोड़े को दाग नहीं लगने दिया। अपनी पगड़ी को किसी के आगे झुकाया नहीं। तू अपना (आड़ा) यश गवा गया, तू अपने राज्य के धुरे को बाँये कंधे से चलाता रहा, नौरोज में नहीं गया, न आतसों (बादशाह डेरों) में गया, कभी शाही झरोखे के नीचे खड़ा नहीं रहा, तेरो रौब दुनिया पर गालिब था, अतएव तू सब तरफ से जीत गया।" यह सुनकर दरबारियों ने सोचा कि बादशाह इस कवि पर क्रुद्ध होगा, परन्तु बादशाहने दुरसा आढ़ा को इनाम देकर कहा कि इस कवि ने मेरा ठीक भाव समझा है। ऐसे यशस्वी एवं अपराजेय योद्धा महाराणा प्रताप और उनके उदयपुर का यश सदैव स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा।

महाराणा प्रताप के शौर्य से प्रभावित वियतनाम के राष्ट्राध्यक्ष

वियतनाम विश्व का एक छोटा-सा देश है जिसने अमेरिका जैसे बड़े बलशाली देश को झुका दिया।

लगभग बीस वर्षों तक चले युद्ध में अमेरिका पराजित हुआ था। अमेरिका पर विजय के बाद वियतनाम के राष्ट्राध्यक्ष से एक पत्रकार ने एक सवाल पूछा-

जाहिर सी बात है कि सवाल यही होगा कि आप युद्ध कैसे जीते या अमेरिका को कैसे झुका दिया?

उस प्रश्न के दिए गए उत्तर को सुनकर आप हैरान रह जाएँगें और आपका सीना भी गर्व से भर जाएगा। दिया गया उत्तर पढ़िए।

सभी देशों में सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका को हराने के लिए मैंने एक महान व श्रेष्ठ भारतीय राजा का चरित्र पढ़ा। और उस जीवनी से मिली प्रेरणा व युद्धनीति का प्रयोग कर हमने सरलता से विजय प्राप्त की।

आगे पत्रकार ने पूछा "कौन थे वो महान राजा?"

मित्रों! जब मैंने पढ़ा तब से जैसे मेरा सीना गर्व से चौड़ा हो गया आपका भी सीना गर्व से भर जायेगा।

वियतनाम के राष्ट्राध्यक्ष ने खड़े होकर जवाब दिया- "वो थे भारत के राजस्थान में मेवाड़ के महाराजा महाराणा प्रताप सिंह!!"

महाराणा प्रताप का नाम लेते समय उनकी आँखों में एक वीरता भरी चमक थी। आगे उन्होंने कहा- "अगर ऐसे राजा ने हमारे देश में जन्म लिया होता तो हमने सारे विश्व पर राज किया होता।"

कुछ वर्षों के बाद उस राष्ट्राध्यक्ष की मृत्यु हुई तो जानिए उसने अपनी समाधि पर क्या लिखवाया

"यह महाराणा प्रताप के एक शिष्य की समाधि है!!"
कालांतर में वियतनाम के विदेशमंत्री भारत के दौरे पर आए थे। पूर्व नियोजित कार्यक्रमानुसार उन्हें पहले लाल किला व बाद में गाँधीजी की समाधि दिखलाई गई।
ये सब देखते हुए उन्होंने पूछा- "मेवाड़ के राजा महाराणा प्रताप की समाधि कहाँ है?"
तब भारत सरकार के अधिकारी चकित रह गए और उन्होंने उदयपुर का उल्लेख किया। वियतनाम के विदेशमंत्री उदयपुर गये, वहाँ उन्होंने महाराणा प्रताप की समाधि के दर्शन किये। समाधि के दर्शन करने के बाद उन्होंने समाधि के पास की मिट्टी उठाई और उसे अपने बैग में भर लिया, इस पर पत्रकार ने मिट्टी रखने का कारण पूछा!!
उन विदेशमंत्री महोदय ने कहा, "ये मिट्टी शूरवीरों की है। इस मिट्टी में एक महान् राजा ने जन्म लिया। ये मिट्टी मैं अपने देश की मिट्टी में मिला दूँगा।" "ताकि मेरे देश में भी ऐसे ही वीर पैदा हों। मेरा यह राजा केवल भारत का गर्व न होकर सम्पूर्ण विश्व का गर्व होना चाहिए।"

वैदिक सिद्धान्त

- वैदिक धर्म में छुआछूत, जातिभेद, जादूटोना, डोराधागा, ताबीज़, शकुन, फलित ज्योतिष, जन्मकुण्डली, हस्तरेखा, नवग्रह पूजा, नदी स्नान, बलिप्रथा, सतीप्रथा, मांसाहार, मद्यपान, बहुविवाह, भूत-प्रेत, मृतकों के नाम पिण्डदान, भविष्यवाणी आदि का विधान नहीं है।
- वैदिक धर्म में मनुष्य जीवन का अंतिम लक्ष्य/उद्देश्य/प्रयोजन समस्त दुःखों से छूटना और पूर्ण आनन्द को प्राप्त करना बताया गया है।
- अत्यधिक अज्ञान के नष्ट हो जाने पर सभी दुःखों से छूटना संभव है।

दुष्कर्म की बढ़ती घटनाएँ व उनसे निपटने के अचूक उपाय

-*सत्यवान् आर्य*

पिछले कुछ वर्षों में दुष्कर्म की घटनाओं में व्यापक वृद्धि हुई है। ऐसा नहीं है कि ये घटनाएँ सिर्फ बड़े शहरों में हुई हों बल्कि देश के तमाम छोटे-बड़े शहरों व ग्रामीण इलाकों में समान रूप से इस समस्या ने पैर पसारे हैं। कुछ वर्ष पूर्व दिल्ली में हुई 'दामिनी गैंगरेप केस' जैसी घटना के बाद हुई जन समुदाय की व्यापक प्रतिक्रिया से सरकार जागी व उसने इसके विरुद्ध एक सख्त कानून बनाया जिसे क्रिमिनल लॉ (संशोधन) 2013 का नाम दिया गया। लेकिन कठोर कानून बनने पर भी घटनाओं में पहले की अपेक्षा बढ़ोतरी हुई है। इस लेख के माध्यम से हम इस समस्या के कारणों पर विचार करेंगे जिससे इस समस्या का निवारण सम्भव हो सके क्योंकि दर्शनकार के अनुसार-

कारणाभावात् कार्याभावः।

1. विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण की शिक्षा होः-

ऐसी प्रवृत्तियों पर रोक के लिए चरित्र निर्माण की शिक्षा दिया जाना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि महर्षि मनु के अनुसार 'जन्मना जायते शूद्रः' अर्थात् मनुष्य जन्म से शूद्र अर्थात् मूर्ख, अज्ञानी होता है। वह गुरु के पास रहकर विद्या व सत्य भाषणादि गुणों से सम्पन्न बनता है इसलिए वेद भी कहता है- 'मनुर्भव' लेकिन आधुनिक शिक्षा प्रणाली में विद्या के नाम पर सिर्फ भौतिक पदार्थों का ज्ञान कराया जाता है। क्या कभी किसी स्कूल या कॉलेज में सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, आत्मा, परमात्मा, व्यवहारादि की शिक्षा दी जाती है। जब कभी न माता-पिता, न गुरु लोग ऐसी शिक्षा देते हैं तो संतानों से ऐसी अपेक्षा व्यर्थ है कि वे समाज में गलत व्यवहार नहीं करेंगे। वस्तुतः देश की सभी समस्याएँ

यहीं से पैदा होती हैं। आधुनिक व प्राचीन शिक्षा प्रणाली का मूल भेद यही है। प्राचीन काल में मानव निर्माण पर अधिक बल दिया जाता था। आजकल मशीनों के निर्माण पर अधिक बल दिया जाता है। फलस्वरूप आज का युवा भौतिक विज्ञान व तकनीक के बारे में तो गहन जानकारी रखता है लेकिन उसमें यह जानकारी व भाव नहीं है कि मैं समाज में किस प्रकार का व्यवहार करूँ जिससे मैं स्वयं को व समाज को उन्नत बना सकूँ। इसलिए ऐसी घटनाओं व समाज में हो रहे अन्य दुर्व्यवहारों को रोकने के लिए मानव की बुद्धि व मन को नियन्त्रित करना अत्यन्तावश्यक है और वह होगा चारित्रिक शिक्षा से।

2. सख्त कानून बने व उसका अनुपालन हो:-

हमारे ऋषियों ने समाज में मानव विकृतियों को नियन्त्रित करने के लिए कठोर नियमों का निर्धारण किया था। मनुस्मृति में भिन्न-भिन्न अपराधों के लिए दिए जाने योग्य कठोर दण्डों का वर्णन आया है। मनु के अनुसार-

दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एव अभिरक्षति।
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः।।

अर्थात् दण्ड ही प्रजा का शासनकर्ता, सब प्रजा का रक्षक, सोते हुए मनुष्यों में जागता है इसलिए बुद्धिमान लोग दण्ड ही को धर्म कहते हैं।

कठोर दण्ड से ही मनुष्यों में डर व्याप्त होता है जिससे वे गलत कार्यों में प्रवृत्त नहीं होते। यह ठीक है कि आज भी भारतीय संविधान में कठोर कानून का विधान हैं लेकिन सिर्फ कानून का होना ही पर्याप्त नहीं बल्कि उसका अनुपालन भी आवश्यक है। अयोग्य शासनकर्त्ताओं के होने से कानून व्यवस्था की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई है। भ्रष्टाचार के द्वारा घुन की तरह खाए जा रहे समाज में कठोर कानूनों का महत्त्व उनके अनुपालन के अभाव में समाप्त हो गया है। इसलिए आज के समय की

यह आवश्यकता है कि इस प्रकार के अपराधों की समाप्ति के लिए कठोर कानूनों को बनाकर उन्हें लागू भी अवश्य किया जाए जिससे समाज में भय मुक्त वातावरण बन सके।

3. अश्लीलता पर रोक लगाई जाएः-

आज जितना मानव अपने को प्रगतिशील घोषित कर रहा है वहाँ उसकी प्रगति का एक पक्ष यह भी है कि उसने अश्लील बोलने में, देखने में, दिखने में, दिखाने में वृद्धि की। एक तरह से अश्लीलता बढ़ाना प्रगति करने का पैमाना बन गया है। दिन-रात टी.वी., इण्टरनेट, समाचार-पत्रादि संचार के माध्यमों द्वारा अश्लीलता को परोसा जा रहा है और उन्हीं संचार के माध्यमों पर दुष्कर्म बढ़ने का रोना रोया जाता है। क्या किसी वृक्ष को खाद-पानी आदि जीवन के लिए आवश्यक तत्त्वों को दिए जाते हुए बढ़ने से रोका जा सकता है? समाज में बढ़ रही अश्लीलता दुष्कर्म की भावना बढ़ाने में खाद-पानी का कार्य करती है। यह संसार का नियम है कि यदि किसी वृक्ष को बढ़ने से रोकना या सुखाना हो तो उसे खाद-पानी आदि जीवनदायी तत्त्वों की आपूर्ति बंद करनी होगी। ऐसा नहीं हो सकता कि हम वे तत्त्व पौधें को देते रहें और वह नहीं बढ़े। इसलिए दुष्कर्म जैसी प्रवृत्तियों पर रोकथाम के लिए अश्लीलता आदि की प्रवृत्तियों पर रोक लगाई जानी चाहिए जो कि उनके बढ़ने में सहायता करती है।

4. त्वरित न्याय व्यवस्था होः-

आज भारत जैसे देश की न्याय प्रणाली में कई छेद हैं जिनमें से एक है न्याय का देर से मिलना। कई अपराधों को या तो इसलिए छिपा दिया जाता है कि कौन पुलिस के चक्कर में पड़े? या कौन अदालतों के लम्बे चक्कर काटे? या कौन अमुक दबंग व्यक्ति से पंगा ले? फिर भी कोई साहस कर अदालतों में गुहार लगाए तो उसे न्याय पाने के लिए एक

लम्बी-चौड़ी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है जो अपराधी को इस बात का पर्याप्त समय व गुंजाइश देती है कि वह सबूतों के साथ छेड़खानी करे, गवाहों को डरा-धमकाकर उनके बयान बदलवाए। ऐसे कई मामलों में तो न्याय हो ही नहीं पाता और कहीं कभी किसी को धक्के खाकर न्याय मिलता है तो जीवन का अधिकतर भाग गुजरने के बाद वह न मिलने के समान है। वस्तुतः देरी से मिला न्याय, न्याय के साथ अन्याय है। इसलिए भ्रष्टाचार से रहित कड़ी कानून व्यवस्था व त्वरित न्याय व्यवस्था आज की महती आवश्यकता है जिसमें पीड़ित निर्भीक होकर अपनी आवाज उठा सके व शीघ्र न्याय पा सके।

उपर्युक्त वेद सम्मत उपायों को यदि अपनाया जाए तो निश्चित रूप से ऐसे कुकृत्यों पर काफी हद तक लगाम लग सकती है लेकिन इसमें सबसे बड़ी बाधा है समाज में वैसे विचार का अभाव, वैसी इच्छा शक्ति का अभाव। इस अभाव का कारण है ऐसी शिक्षा का अभाव जो मानव को मानव बनाने पर जोर दे। पूर्ण सत्य तो यह है कि जब तक देश में मानव निर्माण करने वाली शिक्षा नहीं होती तब तक देश की सभी समस्याएँ जस की तस बनी रहेंगी क्योंकि आग में घी डाले जाते हुए उसे भड़कने से कोई रोक नहीं सकता, सिर्फ पत्तों को सींचने से पौधे की जड़ में पानी नहीं जाएगा और कमजोर नींव पर बनी इमारत आखिरकार गिरेगी ही इसे दुनियाँ का कोई व्यक्ति नहीं रोक सकता।

डिफैन्स कॉलॉनी, हिसार, हरियाणा

आंबेडकर ने एक सपना देखा था

–चन्द्रभान प्रसाद

हम बाबा साहब डॉ. भीम राव अंबेडकर का जन्मदिन प्रतिवर्ष मनाते हैं। पिछले कुछ समय से उनकी मूर्तियाँ तोड़ी जा रही थीं। यह एक तरह से उनके विचार पर हमला है। हालांकि उनकी मूर्तियों को वे तोड़ रहे हैं जो उनके विचार को जानते तक नहीं। डॉ. अम्बेडकर एक ही महापुरुष थे जिन्होंने देश को संविधान दिया। कहने के लिए तो एक ड्राफ्टिंग कमेटी थी पर कमेटी के एक मुख्य सदस्य टी कृष्णमाचारी के अनुसार सारा दायित्व अंततः डॉ. अंबेडकर के कंधों पर आ पड़ा, बाकी सदस्य उनका सहयोग करते रहे। संविधान उन्होंने ही बनाया। मगर उनका मूल्यांकन क्या मात्र संविधान लेखक के रूप में ही किया जाना चाहिए?

डॉ. अंबेडकर का जन्म 1891 में हुआ था और वे अमेरिका स्थित कोलंबिया यूनिवर्सिटी में अर्थशास्त्र की पढ़ाई करने गए। पं. जवाहरलाल नेहरु का जन्म वर्ष 1889 में यानी अंबेडकर से दो वर्ष पहले हुआ। पं. नेहरू वकालत की पढ़ाई करने इंग्लैण्ड गए। विनायक दामोदर सावरकर का जन्म वर्ष 1883 में हुआ यानि वे अंबेडकर से आठ वर्ष बड़े थे। वे भी इंग्लैण्ड वकालत पढ़ने चले गए। श्यामा प्रसाद मुखर्जी वर्ष 1901 में पैदा हुए यानी डॉ. अम्बेडकर से दस वर्ष छोटे, वे भी इग्लैण्ड वकालत की पढ़ाई करने गये। सुभाषचंद्र बोस वर्ष 1897 में पैदा हुए, यानी अंबेडकर से 6 वर्ष छोटे। वह इंग्लैण्ड गए, आईसीएस बनने। उन्नीसवीं सदी के आखिर और बीसवीं सदी के आरंभ तक सक्षम परिवारों में पैदा हुए नौजवान सीधे इंग्लैण्ड का रुख करते थे, वकालत की पढ़ाई कर भारत आते थे, पैसा कमाते थे।

आज जो क्रेज एमबीए, इंजीनियरिंग या मेडिकल का है, वैसा ही क्रेज उस समय भारत में वकालत का था। जहाँ वकालत

के पेशे में तमाम भारतीय रुपये बना रहे थे, वहीं डॉ. अंबेडकर अपने अमेरिकी प्रवास के दौरान भारत को लेकर चिंतित थे। वर्ष 1889 और 1900 में पश्चिम और मध्य भारत में भयानक अकाल पड़ा था। एक अनुमान के अनुसार करीब दस लाख भारतीय भुखमरी के शिकार हो गए थे, लाखों पशु भी मरे। तत्कालीन ब्रिटिश इंडिया सरकार ने इंग्लैण्ड के अर्थशात्रियों से राय माँगी कि किस तरह भारत की कृषि में उत्पादकता बढ़ाई जाए। विशेषज्ञों में बहस चल पड़ी, किताबें छपीं, पत्रिकाओं में लेख भी छपने लगे। अंबेडकर भी कृषि उत्पादकता बढ़ाने की बहस में कूद पड़े। 1918 में 'जर्नल ऑफ़ दि इंडियन इकनोमिक सोसाइटी' में उन्होंने 'स्मॉल होल्डिंग्स इन इंडिया एंड देयर रेमेडीज' शीर्षक लेख में अपने विचार विस्तार से व्यक्त किए। मेरी नज़र में 'स्मॉल होल्डिंग्स' उनकी महानतम पुस्तक है जिसमें अंबेडकर ने तर्क दिया है कि भारत में जब तक खेती औद्योगिक पैटर्न पर नहीं होगी तब तक न तो उत्पादकता बढ़ेगी, न खेती से सरप्लस पैदा होगा और न ही किसान खुशहाल हो पाएगा। यह पुस्तक लिखने के लिए अंबेडकर ने कितना गहन अध्ययन किया होगा, वह पुस्तक के उद्धृत संदर्भों से पता चलता है। मात्र इस एक पुस्तक से डॉ. अंबेडकर इंगलिश विद्वानों में चर्चित हो गए।

डॉ. अंबेडकर के करियर से प्रबुद्ध पाठक परिचित ही हैं। वे भारत आए, अर्थशास्त्र के प्रोफेसर बने जिसमें कुछ सौ रुपये वेतन मिलता था। पैसे की कमी थी, इसलिए वे भी इंग्लैण्ड चले गए और भारत आकर वकालत की। डॉ. अंबेडकर की ही सलाह पर रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना हुई। वकालत से लेकर बाबा साहब के संघर्षों, लेखन, और संविधान रचना, हिंदू कोड बिल पर सरकार से त्यागपत्र की कहानी हम सब जानते हैं। बौद्ध धर्म दीक्षा की क्रांति से भी हम परिचित हैं। पर उनके जीवन का एक पहलू ऐसा भी है

जिसे जाने बगैर हम उनके राष्ट्रप्रेम को नहीं समझ पाएँगे। वर्ष 1951 के अक्टूबर में लोकसभा का प्रथम चुनाव घोषित हो चुका था। डॉ. अंबेडकर ने अपनी पार्टी शिड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन का मैनिफेस्टो लिखते समय डॉ. अंबेडकर साठ साल के हो चुके थे। यदि वर्ष 1918 में प्रकाशित स्मॉल होल्डिंग्स और वर्ष 1951 में लिखे गये मैनिफेस्टो को साथ मिला कर पढ़ा जाए, तो लगेगा कि ये दोनों लेखन कुछ हफ्तों के अंतराल में किए गए होंगे, जबकि दोनों में करीब पैंतीस वर्षों का अंतर है। मैनिफेस्टो में कृषि क्षेत्र के लिए उन्होंने ये तीन सुझाव दिए 1. कृषि का पूर्ण मशीनीकरण 2. बड़े-बड़े फार्म पर खेती, 3. उच्च कोटि के बीज और खाद का उपयोग। साथ ही, उन्होंने भारत के चौतरफा औद्योगीकरण और सरकारी क्षेत्र के साथ-साथ प्राइवेट सैक्टर को भी बढ़ावा देने की वकालत की।

डॉ. अंबेडकर के 'स्मॉल होल्डिंग्स' और मैनिफेस्टो से भारत का एक चित्र उभरता है जिसमें भारतीय कृषि व्यवस्था अमेरिकी कृषि व्यवस्था जैसी दिखती है, भारत के शहर न्यूयार्क जैसे और भारत के गाँव ब्रिटेन गाँवों जैसे लगते हैं। भारत एक सशक्त औद्यौगिक सभ्यता दिखता है। वर्ष 1991 से शुरू हुए आर्थिक सुधार एक आर्थिक क्रान्ति साबित हुए, लेकिन उनका खाका 40 साल पहले अंबेडकर के यहाँ मौजूद था। अपने मैनिफेस्टो में डॉ. अंबेडकर तीन और सलाह दे गए हैं : पहली, जनसंख्या विस्फोट एक समस्या है, दूसरी, चीन से सावधान रहे भारत, तीसरी अमेरिका से दोस्ती बढ़ाए। यह कितना दुखद है, डॉ. अंबेडकर जैसे महान राष्ट्रप्रेमी की मूर्तियों पर हमले बढ़ गए हैं। जो अंबेडकर की मूर्तियों पर पत्थर फेंक रहे हैं, उनके पास कोई राष्ट्र नहीं है। कास्ट (जाति) ही उनका राष्ट्र है, जबकि बाबा डॉ. अंबेडकर के पास एक ऐसा भारत राष्ट्र है जो जाति विहीन है।

आसन-प्राणायाम भर नहीं है योग

-सुरक्षित गोस्वामी

भीतर मुड़कर अपने स्वरूप से जुड़ना ही योग है। योग में हम अपने शुद्ध स्वरूप को जानकर उसी भाव में स्थित हो जाते हैं। सुख-दुख, मान-अपमान, लाभ-हानि, राग-द्वेष का असर साधक पर नहीं पड़ता। भयंकर से भयंकर विपरीत परिस्थिति भी योगी को तिल भर भी हिला नहीं पाती। योग आत्मा में स्थित हो जाने का नाम है। मुक्ति, मोक्ष, कैवल्य, आत्म साक्षात्कार आदि योग के ही अनेक नाम हैं। योग कहते ही आत्मा तक पहुँचने की यात्रा का वर्णन उसमें शामिल हो जाता है। असलियत में जब हम अपने आत्म स्वरूप में स्थित होते हैं तब योगी कहलाते हैं। योग मुक्ति मार्ग के साथ-साथ एक जीवन दर्शन भी है। लेकिन आज चार आसन सीखकर कोई योगी, योगाचार्य, योग गुरु कहलाने लगता है। इससे योग की गरिमा नहीं बढ़ रही है बल्कि योग की उस उच्च स्थिति को धूमिल किया जा रहा है। आज हम योग के नाम पर कुछेक कसरतों को बढ़ावा दे रहे हैं। कहीं ऐसा न हो कि आने वाली पीढ़ियाँ आसन-प्राणायाम को ही वास्तविक योग मानने लगे।

जीवन की संभावनाएँ

आज कुछ लोग धन कमाने के लिए योग का व्यापारीकरण करने पर उतारू हैं। अब से पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था। जिस तरह ज्योतिष के कारोबारीकरण से लोगों का विश्वास उससे उठने लगा, धर्म के व्यवसायीकरण से उसके प्रति श्रद्धा कम होने लगी, उसी तरह योग का व्यावसायिक प्रयोग बढ़ने से लोगों का इससे मोहभंग हो सकता है। योग से बीमारियाँ दूर होती हैं लेकिन योग केवल बीमारियों को दूर करता है, ऐसा प्रचारित करना उचित नहीं है। योग तो मुक्ति का मार्ग है। साधक जब मुक्ति मार्ग पर चलता है तो उसका तन व मन अपने आप ही स्वस्थ हो जाता है। लेकिन योग जब पश्चिमी देशों में गया तो उसके आसनों को ऐसे पेश किया

गया जैसे वह सेक्सी बॉडी बनाने का नुस्खा हो। नतीजा यह निकला कि योग से आध्यात्मिकता दूर हो गई और योग, 'योगा' बन गया। जबकि योग अच्छे और सच्चे मानव का निर्माण करता है और योगा केवल बीमारी को दूर कर शरीर को सुडौल बनाने में मदद करता है।

योग से आध्यात्मिकता निकल जाती है तो वह व्यायाम की श्रेणी में आ जाता है। ऐसा नहीं है कि जो कठिन से कठिन आसन कर ले वह बड़ा योगी हो गया। वैसे तो एक जिमनास्ट की कमर ज्यादा लचीली होती है। वह रस्सी पर एक पैर से चलने में सक्षम है। पर वह बड़ा योगी नहीं बन सकता क्योंकि वह केवल शरीर के स्तर पर टिका है। आत्मा का ज्ञान वहाँ दूर दूर तक नहीं है। हमारे ऋषियों ने ऐसी अनेक खोजें कीं, जिनसे मानव जीवन की संभावनाओं का विकास किया जा सके। उनके सामने सवाल था कि शरीर का रख-रखाव कैसे किया जाए? इसके लिए ऋषियों ने गहन चिंतन किया और पाया कि सभी पशु-पक्षी अपने शरीर को किसी एक आकृति के माध्यम से स्वस्थ बनाए रखते हैं। साँप को देखकर सर्पासन, मछली को देखकर मत्स्यासन, बगुले को देखकर बकासन, गाय को देखकर गोमुखासन, पेड़ को देखकर वृक्षासन, पर्वत को देखकर पर्वतासन, कमल को देखकर पद्मासन आदि अनेक आसनों का निर्माण किया।

इन आसनों के क्रम में मनुष्य जब इन प्राकृतिक आकृतियों से गुजरेगा तो उसका शरीर ऊर्जावान और निरोगी बना रहेगा। फिर उन्होंने अनुसंधान किया कि कौन से आसन शरीर के किस हिस्से पर असर डालते हैं और उनसे कौन से रोग ठीक होते हैं। इस प्रकार योग का वैज्ञानिक पक्ष प्रस्तुत हुआ। आसन, योग का स्थूल और बाह्य भाग है। यह शरीर को स्वस्थ व निरोग बनाए रखता है। ऋषियों ने अनुभव किया कि शरीर को चलाने के लिए एक प्राण शक्ति कार्य करती है जिसका हमारे साँस से सीधा संबंध है। उन्होंने पाया कि जो

पशु धीरे-धीरे साँस लेते हैं जैसे कछुआ, उनकी उम्र ज्यादा होती है और जो जल्दी-जल्दी सांस लेते है जैसे कुत्ता, उनकी उम्र कम होती है। इसलिए ऋषियों ने प्राणायाम का निर्माण किया, जिससे जीवनी शक्ति स्वस्थ रह सके। आसन का उद्देश्य मात्र शरीर को स्वस्थ रखना नहीं बल्कि शरीर की सभी हलचलों को थामकर उसको ध्यान के लिए तैयार करना है। ऐसे ही प्राणायाम का उद्देश्य केवल बीमारियाँ दूर करना नहीं बल्कि चक्रों व कुण्डलिनी शक्ति को जगाकर चित्त में पड़े हुए बुरे संस्कारों का नाश करना है, जिससे साधक का चित्त शुद्ध हो और उसकी आध्यात्मिक यात्रा आगे बढ़े।

दिनचर्या का हिस्सा

हमारी कई इंद्रियाँ हमेशा बाहर की ओर दौड़ती रहती हैं। आँखें रूप निहारती हैं। कान शब्द सुनने मे लगे रहते हैं। जीभ बोलने और खाने में उलझी रहती है। नाक गंध और त्वचा कोमल, कठोर, ठंडा, गरम के अनुभव में लगी रहती है। इन बाहर भागती इंद्रियों से ऊर्जा भी बाहर की ओर बह जाती है तो इसके लिए प्रत्याहार की साधना का वर्णन किया। साथ ही हर व्यक्ति का चित्त अस्थिर रहता है। इसके लिए धारणा की साधना बताई जिससे चित्त शरीर के अंदर स्थित चक्रों पर एकाग्र हो सके। भागते हुए मन को साधने व आत्मा की यात्रा करने के लिए ध्यान का अभ्यास बताया। साथ ही अपने भाव को शुद्ध करने के लिए शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्राणिधान, इन नियमों की चर्चा की।

ये बातें हमने अष्टांग योग को ध्यान में रखते हुए कहीं। लेकिन योग की अनेक विधाएँ हैं जिनमें कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग आदि प्रमुख हैं। इनमें से किसी भी एक मार्ग पर चल कर व्यक्ति सुख, शांति और अच्छा स्वास्थ्य पा सकता है। आज हमें संकल्प लेना चाहिए कि हमें योग को खाने और सोने की तरह ही अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाना है। फिर देखिएगा, जीवन एक उत्सव बन जाएगा।

जब भगवान बुद्ध हताश हुए
(बुद्ध जयन्ती के अवसर पर)

–सत्यानन्द आर्य

भगवान् गौतम बुद्ध जीवन रहस्यों को मालूम करने के लिए बहुत दिनों तक तपस्या और कठोर साधना में लगे रहे। उन्होंने शरीर को भी पर्याप्त कष्ट दिया, खूब चिन्तन किया, पर आत्मज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई।

उन्हें कठिनाइयों और परेशानियों ने विक्षुब्ध कर दिया। क्या करें? वे साधना करते-करते जैसे थक गए थे। पर्वत जैसे ऊँचे आकारवाली परेशानियों से त्रस्त होकर वे हताश हो गये। या यों कहिये कि वे कर्त्तव्य छोड़कर धड़ाम से गिरे।

'अब मैं और अधिक कठिनाइयाँ सहन नहीं कर सकूँगा। मैं मानवता के, सुख और समृद्धि के अपने उच्च लक्ष्य को छोड़ता हूँ'- ये कायरता के शब्द उनके मन में लगातार घूम रहे थे। उन्होंने अपनी तपस्या मध्य में ही छोड़कर घर लौटने का निश्चय कर लिया।

वे मन ही मन कह रहे थे, 'मैं व्यर्थ ही इतनी परेशानियों में पड़ा रहा। मैंने जीव के रहस्यों को मालूम करने में बहुत-सा समय नष्ट कर दिया, पर हाय! कुछ हाथ नहीं आया। इतना समय, परेशानी, शारीरिक और मानसिक कष्ट सब व्यर्थ हो गया। अब सब मुसीबतें छोड़ता हूँ।'

निराशा, अविश्वास और पराजय की कायर भावनाओं ने उन्हें क्षुब्ध कर दिया। वे लौट पड़े वापस घर के लिए।

लड़खड़ाते कदमों से वे वापस आ रहे थे कि मार्ग में उन्हें प्यास लगी। जल पीने के लिए वे एक झील के किनारे गये, जल पिया, मन कुछ ठंडा हुआ। सामने एक दृश्य देखा-

एक नन्हीं सी गिलहरी झील के जल में अपनी पूँछ भिगो-भिगोकर पानी बाहर छिड़क रही है। एक बार, दो बार, दस बार, बीस बार, सैकड़ों बार यही काम कर रही है। वह जल में पूँछ भिगोती, सूखी धरती पर आती और पानी बाहर

झाड़ आती है।
उन्हें उससे बातें करने की बड़ी उत्सुकता हुई– "प्यारी गिलहरी! तुम क्या कर रही हो?"
वह दृढ़ता भरे स्वर में बोली– "इस झील के पानी ने मेरे बच्चों को बहाकर मार डाला है। उससे बदला ले रही हूँ। झील को इस प्रकार सुखाकर ही छोड़ूँगी।"
उसने अपना काम पूर्ववत् शुरू कर दिया।
बुद्ध बोले– "झील को सुखा रही हो? बिना किसी बरतन के पानी बाहर फेंक रही हो? तुम्हारी छोटी-सी पूँछ से भला कितनी बूँद सूख पाती होंगी। तुम्हारे इतने छोटे शरीर, थोड़े से बल और सीमित साधनों से भला कैसे यह विशाल झील सूख सकेगी? इसमें न जाने कितने युग का समय लग जाएगा, तुम्हारी आयु ही कितनी है? इतना बड़ा काम और इतने सीमित साधन! यह सब व्यर्थ होगा! व्यर्थ क्यों अपनी शक्ति का अपव्यय कर रही हो? तुम इस झील को कभी खाली न कर सकोगी।"
"यह झील कब खाली होगी या नहीं होगी–यह मैं नहीं जानती, न इसकी कोई परवाह ही करती हूँ। मैं दृढ़तापूर्वक अपने काम में निरन्तर लगी रहूँगी। श्रम करना, लगातार अपनी लक्ष्यपूर्ति में लगे रहना, कठिनाइयों का सामना करना और अन्त में विजय प्राप्त करना मेरी योजना है।"
भगवान बुद्ध के मन में फिर उथलपुथल हुई।
वे सोचने लगे– "जब यह नन्हीं सी गिलहरी अपने थोड़े से साधनों से इतना बड़ा कार्य करने के स्वप्न देखती है, तब भला मैं उच्च मस्तिष्क और सुदृढ़ शरीरवाला विकसित मनुष्य अपने लक्ष्य की पूर्ति क्यों न कर सकूँगा।"
वे फिर वापस अपनी साधना के लिए लौट गये। उन्होंने फिर जंगलों का कठिन जीवन बिताने और घोरतम तपस्या करने का निश्चय किया।
एक दिन वे अपने लक्ष्य में सफल होकर ही रहे।

सेवा की आड़ में ईसाई मिशनरियों द्वारा धर्मान्तरण के विरुद्ध ज्ञापन

-श्याम नारायण अग्रवाल

महोदय, इतिहास साक्षी है कि विदेशी प्रेरणा एवं सहायता प्राप्त ईसाई मिशनरी संगठन सेवा, सहायता के नाम पर दलित, अभावग्रस्त, गरीब हिन्दुओं को प्रलोभन देकर धर्मान्तरण का सतत अभियान चला कर भारतीय लोकतंत्र के आधार जनसंख्या संतुलन को विकृत कर हिन्दुओं को अल्पसंख्यक बनाने का घृणित खेल खेलते आ रहे हैं और भारत सरकार तथा प्रदेशीय सरकारें संविधान के धर्मनिरपेक्षता के सिद्धान्त का दुरुपयोग कर इस ओर से आँखें मूँदें मूक दर्शक बनी हुई हैं। गत् 26 अगस्त 2004 को बरेली में आयोजित आर्य महासम्मेलन में सादर आमंत्रित किये जाने के बाद भी ईसाई समुदाय के सर्वश्री फादर बेंजामिन बी. लाल, विशप एम.एस. सिंह, विशप एंथनी फर्नांडिस, फादर जूलियन पिंटो व फादर टॉक विशार्ट आदि द्वारा सम्मेलन में अपना मत प्रस्तुत करने हेतु उपस्थित न होना, किन्तु सम्मेलन के तुरन्त बाद दिनांक 27/8/04 को इसी स्थान संजय कम्यूनिटी हाल बरेली में हिन्दुओं का सैकड़ों की संख्या में सामूहिक धर्मान्तरण कराया जाना मिशनरियों के पूर्व नियोजित षड्यन्त्र का अंग है। मिशनरियों के इस कृत्य से हिन्दू समाज का आहत होना स्वाभाविक है। पूर्व में भी कई बार समय-समय पर ईसाई मिशनरियों ने दवा से दवा चंगाई सभाओं आदि का आयोजन कर अभावग्रस्त गरीब हिन्दुओं को भ्रमित कर ईसाई बनाने के प्रयास किये हैं और आर्य समाज, हिन्दू जागरण मंच, शिवसेना आदि के जागरूक कार्यकर्ताओं द्वारा विरोध करने तथा प्रशासन से शिकायत करने पर इनके आयोजनों पर रोक लगाई जा चुकी है तथा भारतीय संविधान भी लोभ-लालच आधारित धर्मान्तरण की अनुमति नहीं देता है। दिनांक 27/8/04 को संजय कम्यूनिटी हाल में हिन्दुओं के धर्मान्तरण हेतु आयोजित चंगाई सभा के आयोजक श्री आईजेक अग्रवाल पूर्व नाम श्री नितिन अग्रवाल नाईजीरिया से इसी निमित्त प्रशिक्षण प्राप्त कर बरेली भेजे गये हैं। श्री अग्रवाल को भी भारी प्रलोभन देकर ईसाई बनाया गया है

जिसकी लिखित शिकायत श्री नितिन अग्रवाल के पिता श्री श्याम नारायण अग्रवाल ने अपने पत्र दिनांक 24.8.04 द्वारा जिला प्रशासन बरेली तथा प्रधानमंत्री भारत सरकार व मुख्यमंत्री उत्तरप्रदेश लखनऊ, नेता विरोधी दल लोकसभा, आदि से करते हुए प्रभावी एवं आवश्यक कार्यवाही करने का अनुरोध किया है। उक्त पत्र की छाया-प्रति प्रस्तुत ज्ञापन के साथ संलग्न है। दिनांक 27.8.04 को चंगाई सभा से तीव्र आहत आर्य प्रतिनिधि सभा जनपद, बरेली, आर्य समाज बिहारीपुर बरेली, शिवसेना बरेली, हिन्दू आदि संगठनों के अधोहस्ताक्षरी जनों का यह प्रतिनिधि मण्डल भारत सरकार से माँग करता है कि ईसाई मिशनरी द्वारा चंगाई सभाओं द्वारा दलित पीड़ित अभावग्रस्त गरीब हिन्दुओं को लोभ लालच में भ्रमित कर ईसाई बनाने के आयोजन की सघन जाँच कराकर उन पर रोक लगाने तथा भारतीय लोकतंत्र के जनसंख्या संतुलन को विकृत होने से बचायेंगे। भारतीय संविधान लोभ लालच के आधार पर धर्मान्तरण के लिए किसी वर्ग को अनुमति प्रदान नहीं करता। हम जनप्रतिनिधियों की बरेली जिले के प्रशासनिक अधिकारियों से माँग है कि चंगाई सभा के आयोजक श्री आई. जे. अग्रवाल को साम्प्रदायिक सद्भाव बिगाड़ने के आरोप में तुरन्त गिरफ्तार करें और बरेली के साम्प्रदायिक सद्भाव को विकृत होने से बचायें, अन्यथा किसी भी प्रतिक्रियात्मक कार्यवाही एवं अप्रिय घटना के लिए जिला प्रशासन स्वयं उत्तरदायी होगा। समाचार पत्रों से ज्ञात हुआ है कि उक्त मिशनरी ने मैथोडिस्ट चर्च के नाम से सभा करने की स्वीकृति ली थी जिसमें इन्हें सुरक्षा हेतु पुलिस उपलब्ध कराई गई थी जबकि ये क्राइस्ट एम्बेसी का परम सुख दिवस के नाम से कार्यक्रम था। इसी प्रकार का एक कार्यक्रम आईएमए हाल में 8 जुलाई 2004 को भी सम्पन्न किया गया था। इस प्रकार पुलिस व प्रशासन को गुमराह कर सरकार व जनता से धोखाधड़ी की गई जिसकी एफआईआर प्रशासन की ओर से की जानी चाहिए।

हम समस्त आर्य समाज, हिन्दू जागरण मंच एवं अन्य संगठन यह जानना चाहते हैं कि क्राइस्ट एम्बेसी का क्या अर्थ है और भारत वर्ष में क्या महत्त्व है और यह कहाँ से पंजीकृत है। 27.

8.04 को धर्मपरिवर्तन का कार्यक्रम जो सम्पन्न हुआ उसके विषय में ईसाई पदाधिकारियों व मुखियाओं का कहना है कि हमें इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं, तो फिर उक्त कार्यक्रम किसने कराया और नितिन अग्रवाल जो आईजेक अग्रवाल है भारत में हिन्दू व ईसाइयों के बीच वैमन्यस्य पैदा कराना चाहते हैं, क्योंकि इन्होंने अपने नाम परिवर्तन की कोई विधिवत् मान्यता प्राप्त नहीं की हुई है, जबकि इनके पास पासपोर्ट भी है। उसकी जाँच कराई जाए। आपकी महान कृपा होगी।

नितिन अग्रवाल के पिता जी द्वारा की गई शिकायत आगे उद्धृत है–

सेवा में, जिलाधिकारी, बरेली।

महोदय, निवेदन इस प्रकार है कि मेरा सबसे बड़ा पुत्र नितिन अग्रवाल 27 माह पूर्व आर बी. इन्वेस्टमेन्ट, लागोस (नाइजीरिया) में फूड इंजीनियर के पद पर नौकरी हेतु गया था। आठ माह तक सब कुछ ठीक रहा। उसके बाद वहाँ के कुछ लोगों ने सुरा, सुन्दरी व धन के बल पर उसका धर्म-परिवर्तन करा दिया। अपनी नौकरी का कान्ट्रेक्ट पूरा होने के बाद दो माह पूर्व जब वह भारत वापस लौटा, तो यहाँ के लोगों को जबरन ईसाई बनाने का कार्य उसे बतौर मिशन सौंप दिया गया। यहाँ तक कि उसने मुझे और मेरे परिवार के अन्य सदस्यों पर भी ईसाई धर्म अपनाने के लिए धन व अन्य प्रकार की सुविधाओं का लालच देकर दबाव डाला। हमारे इन्कार करने पर उसने मेरे साथ मारपीट व हाथापाई भी की। हालांकि मैंने उसे घर से निकाल दिया है, परन्तु घर से बाहर रहकर भी वह लोगों को धन आदि का लालच देकर धर्म-परिवर्तन के लिए उकसा रहा है। इसी संदर्भ में उसने आगामी 27.8.4 को धर्मपरिवर्तन का कार्यक्रम संजय कम्युनिटी हाल, बरेली में सायं 4 बजे आयोजित किया है। इसकी विजिलेंस ज़ाँच तुरन्त कराई जाये, क्योंकि इस प्रकार का कार्य सर्वथा देश व धर्म-विरोधी है। अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि इस सम्बन्ध में आवश्यक कार्यवाही तुरन्त करने का कष्ट करें। आपकी महान कृपा होगी।

12,चाहबाइ, बरेली
दूरभाष : 2587697

THE THEORY OF CAUSATION & DHARMA CHAKRA

-Ashok Vohra

The Buddha, in his teachings, was primarily concerned with questions like. 'Why do we suffer misery, pain, old age and death?' He answered these questions and showed a path to his disciples that could lead them to get rid of all sufferings.

The Buddha regarded metaphysical questions concerning nature of the universe, nature of ultimate reality, nature of the soul, and life after death, as ethically useless, indeterminate questions. They have no bearing on the lived life. Whenever he was asked metaphysical questions, he responded with silence.

His silence does not mean that the Buddha did not know the answers of these metaphysical questions. In Majjhimannikaya Sutta, 63. he says. "Surely do I know much more than what I have told you that? Because my disciples, it brings you no profit, it does not conduce to progress in holiness, because it does not lead to the turning from the earthly, to the subjection of all desire, to the cessation of the transitory, to peace, to knowledge, to illumination, to Nirvana."

Like existentialists, the Buddha argued that questions relating to suffering and sorrows, their origin, cause and the path leading to their cessation, are the most significant of all phillosophical questions. These questions, he argued, are profitable in leading a happy and contented life. They deal with 'fundamentals of religion'. By bringing an end to hate, they usher a life of 'absence of passion, quiescence, knowledge, supreme wisdome and nirvana'. He argued, "Phillosophy purifies none, peace alone does."

The Buddha firmly believed in 'pratityasamutpada'. the causality principle-namely, that everything has a cause. 'Nothing comes out of nothing exnihilo nihil fit.' Following this principle, he argues that the fact of suffering has to have a cause It must depend on some antecedent conditions. Through the 12-linked chain for the cause of the existence of suffering called Dwadash Nidan, Janam-maran chakra, Samsara-chakra, Dharma-chakra, or Bhava-chakra, the Buddha shows that the root cause of pain and suffering is desire and ignorance.

According to the 12-spoked wheel, there is suffering because of birth. Birth is because of the will to be born, which in turn is because of clinging to worldly objects due to desire for enjoyment of earthly objects. Craving is because of sense-experience that comes with contact with the objects. Contact is possible because of sense organs. Sense organs cannot exist without the mind-body organism. Mind-body organism would not function without consciousness. Primordial consciousness is due to impressions of our karma. Finally impressions are there because of ignorance.

Removal of ignorance leads to cessation of suffering, desire and attachment. Buddha not only finds the cause of suffering but also tells us about the eightfold path with which we can attain nirvana, liberation from suffering. The Dharma Chakra forms the core of the Buddha's teachings. His other teachings like law of karma, momentariness, no-soul doctrine, eightfold path, and unreality of matter can be deduced as its corollaries.

The Dharma Chakra is precursor of the biological Darwinian as well as anti-Darwinian evolution as well as anti-Darwinian evolutionary theories. Modern evolutionary theories uphold that past, present and future evolution of the animate organism is an internal response of the species to the external, inherited or environmental material conditions. The theory of causation proves that the internal conditions like consciouis or unconscious desire and will, are responsible for the external phenomenon of suffering.

Date of Pubn. : 31.7.2018 Posted at - NIE - H.O. Postal Date : 2-3 August 2018
RNI Reg. No. DELBIL/2007/22062 Postal Regd. No. DL(W) 10/2143/2017-2019

इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नुगादपरोऽअर्थमेतम्
शतं जीवन्तु शरदः पुरूचीरन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन।। (यजु.35-15)
ऋषिः - सङ्कसुक, देवता-ईश्वरः, छन्दः-त्रिष्टुप्

सभी जीवात्माओं को परमेश्वर का नियत आचरण कर मर्यादा में रहना चाहिए। पुरुषार्थ से कमाना चाहिए अर्थात् ईमानदारी से कमाना चाहिए। ईश्वर में आस्था रखनी चाहिए। सत्यता से रहना चाहिए। कल्याणकारी कर्म करने चाहिए। निरोग होकर उचित खाद्य पदार्थों का सेवन कर के सौ वर्ष जीने का लक्ष्य रखना चाहिए।

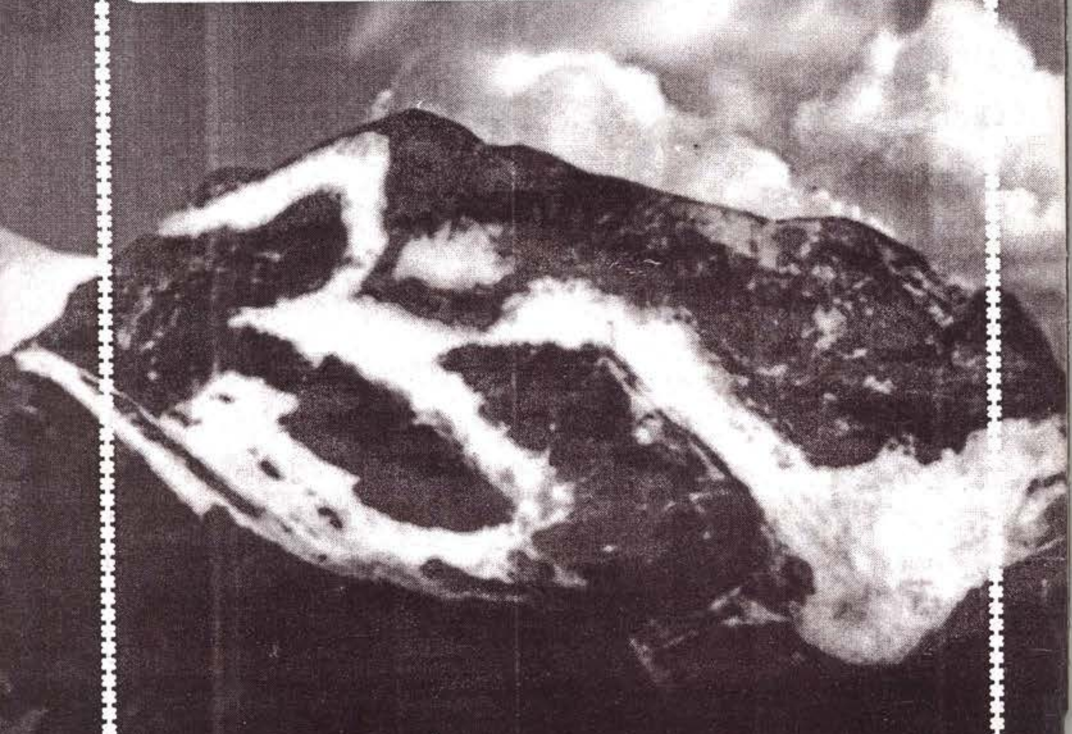

All living souls have to be within the limit. The boundary of discipline and safety should never be crossed. Earn with honesty. Have faith in God. Be truthful. Do noble deeds. Should have proper food to live hundred years. (Yujurveda 35-15)

Printed by - Friendsprintofast, New Delhi-58